संजीव के उपन्यासों में नारी चेतना : एक अनुशीलन

राँची विश्वविद्यालय, राँची के हिन्दी विभाग में पीएच. डी. प्रवेश हेतु प्रस्तुत शोध प्रारूप

शोध निर्देशक

डॉ० किरण कुमारी

सहायक प्राध्यापक

हिन्दी विभाग,

राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी

सुमन कुमारी

(नेट)

विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

संजीव के उपन्यासों में नारी चेतना : एक अनुशीलन

हिन्दी कथा साहित्य में संजीव एक बहुचर्चित नाम हैं। संजीव के उपन्यासों में ग्रामीण, आँचलिकता, मजदूर वर्ग, पिछड़े तथा शोषित वर्ग और अंधविश्वास के नाम पर स्त्रियों के शोषण एवं दमन का चित्रण भी हुआ है। संजीव का जन्म 6 जुलाई 1947 ई0 को उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जिले के गाँव बाँगर कलाँ में हुआ था। वैसे तो इनका जन्म तिथि 6 जुलाई 1947 ई0 मूलरूप से नहीं है। क्योंकि जब संजीव के जन्म तिथि के बारे विभागाध्यक्ष ने संजीव से पूछा तो उसे मालूम न था, तब लोगों ने गुणा जोड़ बैठाकर इनका जन्म तिथि रखा गया। संजीव जी का बचपन का नाम रामसंजीवन प्रसाद था, संजीव जी ने अपनी पहली कहानी 'किस्सा एक बीमा कंपनी की एजेंसी का' 'सारिका' पत्रिका में 'राम संजीवन' नाम से भेजी थी, जिसे कमलेश्वर जी ने काटकर संजीव बना दिया, क्योंकि लिखते वक्त स्याही सूख गयी थी। इनकी शिक्षा विज्ञान विषयों को लेकर हुई। सन् 1965 से 2003 ई0 तक इंडियन आयरन एंड स्टील कम्पनी, कुल्टी में केमिस्ट इंचार्ज के रूप में काम किया। करीब साल भर तक माधव प्रकाशन में संपादन कार्य करने के बाद राजेन्द्र यादव द्वारा हंस का संपादक नियुक्त होकर दिल्ली में ही रहने लगे। संजीव जी का अधिकांश लेखक शोध केंद्रित हैं। उनकी रचना प्रक्रिया भी उनकी इस समझ को प्रकट करती है कि रचना भावावेग की परिणति से आगे बढ़कर संघर्षपूर्ण निर्माण की प्रक्रिया है। स्वयं संजीव जी का मानना है कि शोध और अनुसंधान से मुझे लगता है कि मैं नहीं लिख पाऊँगा। संजीव के लेखन में जातिवाद, सामन्तवाद, पूँजीवाद, साम्राज्यवाद, विस्तारवाद, उपनिवेशवाद हैं। संजीव ने लिखा है कि ''जिस व्यक्ति की सबसे ज्यादा कद्र करता हूँ वे हैं भगत सिंह।'' जिस चीज से सबसे ज्यादा नफरत है वह है आदमी का कमीनापन। लेखक होने के नाते किसी विशेष सुविधा की माँग भी नहीं करता, जिस देश के तीन–चौथाई लोग बूढ़े से लेकर बच्चे तक दिन–रात जांगर (श्रमशीलता) पेरकर भी भूख, अभाव, दमन और जलालत की जिन्दगी जीते रहे हैं, वहाँ एक रचनाकार की गर्दिश (संकट) को उछाला जाना वाहियात बात है। इस लिहाज़ से रोटी खाना और कपड़े पहनना तक अपराध लगने लगता है।

यूँ तो साहित्य के प्रति रूचि जगाने का श्रेय वरिष्ठ मित्र नरेन्द्रनाथ ओझा को जाता है, पर शुरू–शुरू में साहित्य के क्षेत्र में चारा देकर ही बुलाया गया था। सातवीं कक्षा में पहला भाषण गांधीजी पर रटा–रटायाः फिर तुलसी जयन्तियाँ, वाद–विवाद प्रतियोगिता। इच्छा के विरूद्ध विज्ञान का छात्र बना दिया गया।

भाषा के प्रति मोह बढ़ रहा था। पन्त प्रिय कवि थे। प्रेमचन्द, सुदर्शन, शिवपूजन सहाय पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी की रचनाओं से प्रेरित होकर पहली हृदय – परिवर्तन की कहानी हस्तलिखित पत्रिका 'पल्लव' में छपी। यह जानकर अच्छा लगता है कि हिन्दी के एक गंभीर कथाकार संजीव है जो नारियों के संघर्ष को अपने उपन्यासों के माध्यम से सामने लाते हैं, उनके संघर्ष को संवेदना के तल पर अनुभव करते हैं।

कृतियो पर फिल्में

- ❖ 'सावधान! नीचे आग है' उपन्यास पर 'काला हीरा' नामक टेलीफिल्म
- ❖ 'हिमरेखा' कहानी पर प्रकाश झा प्रोडक्शन' द्वारा फिल्म 'निर्माणाधीन।
- ❖ श्याम बेनेगल द्वारा निर्देशित फिल्म 'वेल इन अब्बा' कहानी 'फुलवा का पुल' पर आधारित।

सम्मान

- प्रथम पुरस्कारः सारिकाः सर्वभाषा कथा प्रतियोगिता, 1980
- प्रथम कथाक्रम सम्मान लखनऊ, 1997
- इन्दु शर्मा स्मृति अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान – 2001
- भिखारी ठाकुर लोक सम्मान 2005
- 'पहल' सम्मान 2006
- सुधा स्मृति सम्मान, 2008
- साहित्य अकादमी पुरस्कार 'मुझे पहचानो' 2023

'किशनगढ़ के अहेरी' – 1981 ई0

प्रकाशन क्रम के अनुसार संजीव जी का पहला उपन्यास 'किशनगढ़ के अहेरी' है। यह मीनाक्षी पुस्तक मंदिर द्वारा सन् 1981 में प्रकाशित हुआ है। इस उपन्यास में किशनगढ़ और गोमती नदी का तट, वहाँ का ग्रामीण परिवेश, गरीबी अंधविश्वास तथा सामंतवादी वृत्ति का सफलतापूर्वक चित्रण हुआ है। किशनगढ़ के जमींदार, सेठ, महाराज जैसे लोग अबला, विधवा नारी का शोषण करना अपना कर्तव्य मानते हैं। अन्याय के खिलाफ संघर्ष करने का कार्य जय करता है। इस उपन्यास में लेखक ने शोषक तथा शोषितों का संघर्ष स्पष्ट किया है।

'सर्कस' – 1984

राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा सन् 1984 ई0 में इसका प्रकाशन हुआ है। यह नायिका प्रधान उपन्यास है। 'सर्कस' में काम करने वाले उपेक्षित कलाकार, मजदूर और सर्कस का सजीव चित्रण यहाँ पर प्रस्तुत हुआ है, सर्कस आज खत्म होती हुई कला है। सरकारी संरक्षण और प्रोत्साहन के अभाव, आधुनिक टेकनॉलाजी आधारित मनोरंजन के प्रभुत्व और उसकी अपनी आन्तरिक समस्याओं के चलते वह अपनी पारम्परिक जगह को खोता ही जा रहा है। हमारे वरिष्ठ कथाकार संजीव ने 'सर्कस' उपन्यास के माध्यम से यह दिखाने की कोशिश की है कि जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। वह चाहे वहाँ काम करने वाले लोगों की पीड़ा हो या जानवरों की यह कृति हमें यह अनुभव कराती है कि उस छोटे से तंबू में हमें आशा–निराशा, सुख–दुख, खुशी–गम आदि। यह हमारे जिन्दगी से रूबरू कराती है। 'सर्कस' केवल तमाशा दिखाना ही नहीं है, बल्कि एक रूपक है।

धार – 1990

यह उपन्यास राधाकृष्ण प्रकाशन द्वारा नई दिल्ली से सन् 1990 में प्रकाशित हुआ है। संजीव ने इस उपन्यास के माध्यम से आदिवासी जीवन और संथाल परगना की वास्तविकता को पूरी शिद्धत से उभारा है। पहले बिहार और अब झारखण्ड का ऐसा ही एक क्षेत्र है संथाल परगना। संजीव ने 'धार' उपन्यास को दो खंडों में बाँटा है। यह उपन्यास संथाल परगना के आदिवासियों के शोषण, संघर्ष और उनके जीवन की चुनौतियों को और उनके जेहन में पल रहे सपनों को भी दिखाया गया है। इस उपन्यास में दोनों खंडों में कथा नारी पात्र मैना और

उसके परिवार समाज के ईद–गिर्द घूमती है। इस उपन्यास की कथा नायिका मैना है जो हिंदी उपन्यास साहित्य में अपनी पहचान स्थिर करती है। इस उपन्यास की शुरूआत जेल की उस घटना से होती है जहाँ एक स्त्री (कंदी) मैना जेल में जन्म दिए बच्चे को छोड़कर चली जाती है। किंतु जेलर द्वारा उस शिशु को एक कैदी (मंगर) को सौपने के तुरंत बाद ही वह स्त्री अपने बच्चे को अपनाने से इन्कार करती है। ‘‘जब पएले–पएले तेजाब का फैकटरी बना न, तो हमरा माँ से बाप का झगड़ा हुआ। इस बात को लेकर माँ अलग हो गया बाप से। तब महेन्दर बाबू जानगुरू (ओझा) को दो सौ रूपैया दिया। इधर गाँव में जब तेजाब को बहा हुआ पानी पी के श्याम का भैंस मर गया तो उसका बाप ओझा का पास गया। ऊ शाल का पत्ता में तेल लगा के मन्तर पढ़ा, बोला मैना का माँ डायन है, उसका चलते–ई ये सब होता। हम तब छोटा था। माँ अलग रएता था। गाँव का सब घेर लिया उसको, बोला तू डायन है। निकाल दो सौ रूपया, दो ठो बकरा। माँ घबरा के भागा। सब ऐसे खदेड़ लिया जैसे वो मानुख जात नई पागल कुतिया हो। उसको जब मारा तो वह खेत में गिर पड़ा, भौंत बिनती किया, हम डायन नई हैं, इतना पैसा कआँ से देगा। लेकिन कोई माना नईं। तब ओझा बोला, ‘‘काल तक पैसा दे दो, नईं तो गाँव छोड़ दो।‘‘ और माँ तब से जो गया कि आज तक कोई उसको नईं देख सका।‘‘

संथाली गीत के साथ वृक्षारोपन ...
नोड़ाक केदा लाङ दुआर केदा
बांद केदा लाङ पुखुर केदा
रोहोयालङ सारी नुथे से तालेदारे
गुंजुक गुरूक रे अतुय तोहन!

(हमने घर बनाया, द्वार बनाया, बाँध बाँधे और पोखरे खोदे। प्यारे चलो, अब हम आम एवं ताड़ के पेड़ भी लगाएँ, क्योंकि मृत्यु के बाद यही हमारी यादगार रह जाएँगे।)

इस उपन्यास की नायिका मैना प्रेमचन्द के ‘गोदान‘ की धनिया और एमिल जोला के ‘जर्मिनल‘ की माहेदी की दुर्धर्ष नायिकाओं की परम्परा की अगली और अधुनातन कड़ी है।

सावधान! नीचे आग है (1986) –

यह उपन्यास राधाकृष्ण प्रकाशन द्‌वारा, नई दिल्ली से 1986 में प्रकाशित हुआ है। इस उपन्यास में चंदनपुर गाँव के कोयला खदान में काम करने वाले मजदूर, आदिवासी जीवन का संघर्ष और शोषण का अंकन हुआ है। संजीव जी ने इस उपन्यास में कोयला खदान के मजदूरों की दीन–दशा को प्रस्तुत किया है।

'पाँव तले की दूब' (1995) –

'पाँव तले की दूब' शीर्षक उपन्यास प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली से सन् 1995 में प्रकाशित हुआ है। संजीव के इस उपन्यास में आदिवासियों के रीति–रिवाज प्रस्तुत हुए हैं। पुराने रीति–रिवाज, अंधश्रद्धा, औरत को डायन घोषित करने वाली कुप्रथा में अटका आदिवासी इस उपन्यास में दिखाई देता है। संक्षेप में संजीव जी ने इस उपन्यास में आदिवासियों की अंधश्रद्धा एवं इनके विकास में अवरोध करने वाले रीति–रिवाजों को प्रस्तुत किया गया है। इसकी कथा–भूमि छोटा नागपुर पठारी इलाके का डोकरी अंचल है। सुदीप्त इस अंचल में एन0टी0पी0सी0 (नेशनल थर्मल पावर कॉरपोरेशन) में इंजीनियर बनकर आता है। वह जन–आन्दोलन से जुड़ा एक लेखक भी है। वह इस अंचल की मानसिक जड़ता को दूर करने के लिए प्रतिबद्ध है, किन्तु वह यहाँ के अनेक प्रकार के अन्तर्विरोधों के चलते असफल होता है और घोर निराशा में आत्महत्या कर लेता हैं समकालीन जीवन की शायद यही सच्चाई है। सही रास्ते पर चलने वाला अन्ततः अवसरवादियों द्वारा तिरस्कृत और बहिष्कृत होने के लिए अभिशप्त है।

जंगल जहाँ शुरू होता है – 2000

यह उपन्यास राधाकृष्ण प्रकाशन द्वारा, नई दिल्ली से सन् 2000 ई0 में 'जंगल जहाँ शुरू होता है' प्रकाशित हुआ है। इस उपन्यास की कथा–भूमि पश्चिमी चंपारण है। इसे मिनी चम्बल भी कहते है। ऊपर–ऊपर से यह उपन्यास डाकू–समस्या को केन्द्र में रखकर लिखा गया प्रतीत होता है, किनतु वस्तुतः जंगल राज के रूप में परिवर्तित आज की पूरी समाज–व्यवस्था की पर्तों को उधेड़कर सामने लाने वाला यह एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। परशुराम यादव, काली, परेमा, वंशी जैसे दुर्दान्त डाकू तो पश्चिमी चम्पारण जैसे सीमित क्षेत्र में जंगल राज कायम करते हैं। स्वार्थ लोलुपता और सत्ता– प्रियता के अतिरिक्त आज न कोई विचार दर्शन है, न नैतिक आदर्श। सबसे बड़ी त्रासदी है कि कुछ

बदलने या सुधारने की ईमानदार कोशिश भी आज व्यर्थ होती जा रही है। उपन्यास में कुमार जैसा पुलिस अधिकारी भी अन्ततः टूट जाता है और जिस जंगल से वह लड़ रहा था, वही जंगल उसके भीतर उग आता है। उपन्यास में मुरली पाण्डेय के रूप में 'नूह' जैसा एक व्यक्तित्व विद्यमान है। मलारी का बच्चा देश का भविष्य है। काली के यह पूछने पर कि 'इसे सौंपेगे किसे?' कुमार कहता हैं – ''उस 'नूह' को जो इस मायावी महाप्रलय में भी जो कुछ श्रेष्ठ है, सुन्दर है, उसे बचा लेने की जिद ठाने बैठा है – मुरली पाण्डे'। निश्चय ही यह उपन्यास आज के सामाजिक यथार्थ को सामने लाने की ईमानदार कोशिश के लिए याद किया जायेगा। जनजातियों और जंगली जीवों के बिन्दु से शुरू होकर यह जंगल फैलता ही चला गया – पटना, लखनऊ, दिल्ली, नेपाल और देश–देशान्तर तक। उपन्यासकार ने बारह वर्षों के निरन्तर श्रमसाध्य शोध से जो अरण्यगाथा पेश की हैं, वह सर्वथा नई है – जितनी मनोरम, उतनी ही भयावह, और जुगुप्साकारी भी।

'सूत्रधार' – 2003

संजीव जी का उपन्यास सूत्रधार राधाकृष्ण प्रकाशन द्वारा, नई दिल्ली सन् 2003 में प्रकाशित हुआ है। यह जीवनी परक उपन्यास है। इसमें प्रख्यात लोक नाटककार भिखारी ठाकुर को उपजीव्य बनाया गया है। जीवनी–परक होने पर भी यह उपन्यास आज के लोक–जीवन की बहुविध विडम्बनाओं और उनके भीतर से गुजरते हुए एक संवेदनशील रचनाकार के बहुस्तरीय जीवन–संघर्ष को मूर्त करने में सफल सिद्ध हुआ है। एक स्तर पर इसे दलित–विमर्श को नया आयाम देने वाला उपन्यास भी कहा जा सकता है। केन्द्र में है भोजपुरी गीत–संगीत और लोक नाटक के अनूठे सूत्रधार भिखारी ठाकुर। संजीव को इसमें महारथ हासिल है यही कारण है कि 'सूत्रधार' की शक्ल में उतरे भिखारी ठाकुर भोजपुरी समाज में रचे–बसे लोकराग और लोकचेतना को व्यक्त ही नहीं करते, उद्दीप्त भी करते हैं।

फांस –2015

संजीव का उपन्यास 'फांस' वाणी प्रकाशन से 15 मई 2015 ई0 को प्रकाशित हुआ था। इसके केन्द्र में हैं विदर्भ और समूचे देश में तीन लाख से ज्यादा हो चुकी किसानों की आत्महत्याएँ और 80 लाख से ज्यादा किसानी छोड़ चुके भारतीय किसान। स्त्री पात्रों में खास कर शकुन और छोटी की सकारात्मक और

जिजीविषा पर बात की जाए तो, तमाम विपरीत परिस्थितियों के बीच शकुन और छोटी जिस तरह समय की विरूद्ध उम्मीद और बदलाव का संघर्ष जारी रखती हैं। यह उपन्यास समर्पित है : सबका पेट भरने और तन ढकने वाले देश के लाखों किसानों और उनके परिवारों को जिनकी हत्या या आत्महत्या को हम रोक नहीं पा रहे हैं।

'मुझे पहचानो' 2020

यह उपन्यास सेतु प्रकाशन द्वारा, 2020 में प्रकाशित हुआ है। समाज की परम्पराओं व व्यवस्थाओं के निर्माण में पुरूष की वर्चस्ववादी मानसिकता की अहम भूमिका रही है। इन्हीं निर्मितियों में एक है सती प्रथा। इसी सती प्रथा को केन्द्र में रख कर उपन्यास 'मुझे पहचानो' समाज के धार्मिक, सांसारिक और बौद्धिक पाखंड की परतें उधेड़ता है। ''अव्वल तो राजकुमारियाँ जन्म ही नहीं ले पातीं, जन्म ले भी लिया तो जी नहीं पातीं और जी भी गयी, जैसे अभी लाल साहब की एक है, तो उसे काफी परदे में रखा जाता है।'' साई मंदिर से भी बड़ा! तिरूपति से भी बड़ा! सबरीमाल से भी बड़ा! पद्यनाम से भी बड़ा! सबसे बड़ा होगा अपना यह सती मंदिर।'' यह नया खेल क्यों रचा दुबे ने। दोनों तरफ मौत की निष्ठा कठघरे में थी। इसलिए .....! माने मंदिर खड़ा हो गया, ''अपने देश में खुद को, खुद के बाल—बच्चों को बेच कर भी धरम के नाम पर सब कुछ न्यौछावर कर देने की परंपरा रही है।''

इसी सती प्रथा को केन्द्र में रखकर उपन्यास 'मुझे पहचानो' समाज के धार्मिक, सांसारिक और बौद्धिक पाखंड की परतें उधेड़ता है। उपन्यास में एक महिला इस प्रथा को समर्थन देते हुए कहती है .... ''जीवन में कभी—कभी तो ऐसे पुण्य का मौका देते हैं राम!'' उपन्यास में 'मुझे पहचानो' इसी तरह अमानवीय धार्मिक मान्यताओं को खंडित करने और पाखंड में लिपटे झूठे गौरव से पर्दा हटाने का प्रयास करता है। इसी क्रम में धर्म और धन के धालमेल को भी उजाकर करता है।

निष्कर्ष :– इन उपन्यासों के विवेचन से हम कह सकते हैं कि संजीव जी एक उपन्यासकार दिखाई देते है। उन्होंने समाज के विविध वर्ग के जीवन को करीब से देखा है, जाना है पहचाना और फिर अपने साहित्य में उजागर किया। ग्रामीण परिवेश, आदिवासी जीवन, सर्कस के मजदूर, कोयला खदान के मजदूर, सती प्रथा आदि नारी की संघर्षशीलता को अपने उपन्यासों के पात्रों में वखूबी दिखाया है। उनके उपन्यास–साहित्य में आदिवासी नारी जीवन संघर्ष की अनेक छवियाँ अंकित हैं। आदिवासी नारी संघर्ष पूर्ण जीवन जीने के लिए मजबूर है। इन्हें पुरूषों की भाँति आजादी से रहने के अवसर मिलने के बाद भी इन स्त्रियों का शोषण किया जाता है।

शोध का उद्देश्य :–

संजीव मूलरूप से पिछड़े और उपेक्षित क्षेत्र की दर्दनाक व्यथा को वाणी देने वाले कथाकार हैं। संजीव ने अपने अधिकांश लेखन में आदिवासी जनजातीय लोगों की सामाजिक, आर्थिक मानसिक समस्याओं तथा उनके पिछड़ेपन को केन्द्र में रखा। संजीव ने अपने उपन्यासों में नारीके संघर्ष को बखूबी दिखाया है।

- संजीव के उपन्यासों में नारी पात्रों के संघर्ष को जानना, समझना।
- संजीव के उपन्यासों के माध्यम से दलित, आदिवासी, मजदूर, किसान और स्त्री जैसी उपेक्षित वर्गों का अध्ययन करना।
- संजीव जी के उपन्यासों में चित्रित नारी की व्यथा को जानना।

महत्व :– माकर्सवादी चिन्तनधारा का प्रभाव संजीव के समग्र लेखन पर परिव्याप्त है। स्वयं संजीव अपने आपको वामपंथी मानते हैं। किसानों की बदहाली के प्रति आस्था की जड़ यह विरासत है। संजीव देश से अधिक वंचित वर्ग के लिए लिखते हैं, सामाजिक उत्पीड़न, मानवीय जलालत, धार्मिक तिरस्कार, आर्थिक असमानता के खिलाफ लिखते हैं।

पूर्व अध्ययन :–

प्रस्तावित शोध कार्य 'संजीव के उपन्यासों में नारी चेतनाः एक अनुशीलन' को सामने लाने में यथा सम्भव भूमिका निभा सकेगें। जहाँ तक मेरी जानकारी है इस विषय पर निम्नांकित शोध कार्य हुए हैं –

- संजीव के उपन्यासों में संवेदना और शिल्प, लखनऊ विश्वविद्यालय
- संजीव के साहित्य में समकालीन विमर्श, जम्मू विश्वविद्यालय
- संजीव के कथा–साहित्य में लोक चेतना, दिल्ली विश्वविद्यालय
- संजीव के उपन्यास और साहित्यिक विमर्श, दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्युट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
- संजीव के उपन्यासों में युगबोध, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़
- संजीव के उपन्यासों में आँचलिक एवं अनछुए संदर्भ, कलकत्ता विश्वविद्यालय

शोध की प्रविधि :–

इस शोध को करते समय शोध की विभिन्न सन्दर्भ ग्रन्थ देखते हैं:–

- समीक्षात्मक
- विवेचनात्मक
- विश्लेषणात्मक
- विचारात्मक
- सामाजिक संवेदनाओं और भावनाओं के सभी पहलुओं को परिस्थितियों, समाजशास्त्रीय प्रविधि का प्रयोग किया जायेगा। इसके साथ ही लेखक के विचार, पत्र–पत्रित्रकाओं को भी अध्ययन का आधार बनाया जाऐगा।

साहित्य अवलोकन

वर्तमान में हो रहे विकास के नाम पर जनजातियों पर होने वाले शोषण के बारे में बारिकी से वर्णित किया गया हैं, महिलाओं के साथ हुए अत्याचार और शोषण का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया हैं। नारियों को कैसे अपने ही परिवार जनों से अपनी पहचान के लिए अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करते हुए दिखाया गया हैं।

शोध की सीमाएँ :–

हर संशोधन की कुछ न कुछ सीमाएँ होती हैं। उसी सीमा में रहकर ही शोधार्थी को अपने संशोधन को पूर्ण करना पड़ता हैं –

- संजीव के उपन्यासों का अध्ययन करना हैं।
- संजीव के साहित्य पर स्त्री के संघर्ष के आधार पर संशोधन करना हैं।
- प्रस्तुत संशोधन स्त्री के संघर्ष को आधार मानकर ही पूरा किया जाऐगा।

संजीव के उपन्यासों में नारी चेतना : एक अनुशीलन

प्रथम अध्याय – संजीव का व्यक्तित्व और कृतित्व

क) संजीव का जीवन परिचय

जन्म

बालपन

शिक्षा–दीक्षा

पारिवारिक पृष्ठभूमि

ख) संजीव का रचनात्मक संसार

ग) सम्मान पुरस्कार

द्वितीय अध्याय –हिन्दी उपन्यास साहित्य में नारी चेतना का उत्तरोत्तर विकास

क) प्रेमचंदपूर्व उपन्यासों में नारी चेतना

ख) प्रेमचंदयुगीन उपन्यासों में नारी चेतना

ग) प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों में नारी चेतना

घ) समकालीन उपन्यासों में नारी चेतना

तृतीय अध्याय – संजीव के साहित्य में रूढ़िवाद और परम्परा विरोधी नारियों का चारित्रिक वैशिष्ट्य

क) संजीव के कहानियों में रूढ़िवाद विरोधी नारियों का चरित्र

ख) संजीव के उपन्यासों में रूढ़िवाद विरोधी नारियों का चरित्र

ग) संजीव के अन्य साहित्य में रूढ़िवाद विरोधी नारियों का चरित्र

घ) संजीव के साहित्य की विशेषताएँ

चतुर्थ अध्याय – संजीव के उपन्यासों में नारी चेतना

क) नारी विमर्श की व्युत्पत्ति, अर्थ और परिभाषा

ख) आधुनिक परिदृश्य में नारी संघर्ष के बदलते स्वरूप

ग) संजीव के उपन्यासों में नारी–संघर्ष के विविध रूप से उनका चारित्रिक वैशिष्ट्य

पंचम अध्याय – संजीव और अन्य समकालीन रचनाकारों के साहित्य में नारी चेतना

क) कमलेश्वर

ख) राजेन्द्र यादव

ग) जैनेन्द्र

घ) यशपाल

षष्ट अध्याय – भाषा शैली और शिल्पगत वैशिष्ट्य

क) संजीव के उपन्यासों की भाषा शैली

ख) संजीव के शिल्पगत वैशिष्ट्य

उपसंहार

आधार ग्रंथ सूची

1. संजीव – 'किशनगढ़ का अहेरी' – मीनाक्षी पुस्तक मंदिर द्वारा सन् 1981 ई0 में प्रकाशित।
2. संजीव – 'सर्कस' – राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा सन् 1984 ई0 में प्रकाशन।
3. संजीव – 'धार' – राधाकृष्ण द्वारा नई दिल्ली से सन् 1990 में प्रकाशित। पृ0–39, पृ0–137
4. संजीव – 'सावधान! नीचे आग है' – राधाकृष्ण प्रकाशन द्वारा, नई दिल्ली से 1986 से प्रकाशित।
5. संजीव – 'पांव तले की दूब' – प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली से सन् 1995 ई0 में प्रकाशित।
6. संजीव – 'जंगल जहाँ शुरू होता हैं – राधाकृष्ण प्रकाशन द्वारा, नई दिल्ली से सन् 2000 ई0 में प्रकाशित।
7. संजीव – 'सूत्रधार' – राधाकृष्ण प्रकाशन द्वारा, नई दिल्ली सन् 2003 ई0 में प्रकाशित।
8. संजीव – 'फाँस' – वाणी प्रकाशन द्वारा, सन् 2015 में प्रकाशित।
9. संजीव – 'मुझे पहचानो' – सेतु प्रकाशन द्वारा, सन् 2020 में प्रकाशित। पृ0सं0– 9, पृ0सं0– 93

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. तिवारी डॉ0 रामचन्द्र, हिन्दी गद्य का साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
2. परमार शुभ्रा, नारीवाद सिद्धांत और व्यवहार, ओरियंट ब्लैकस्वान, 2015
3. प्रसाद माता, हिन्दी काव्य में दलित काव्यधारा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1993

4. भटनागर डॉ0 अनुभूति, नारी समस्याओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन, हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर
5. श्रीवास्तव श्री जगदीश, समकालीन कविता पर एक बहस, चित्रलेखा प्रकाशन, इलाहाबाद, 1978
6. टंडन डॉ0 प्रतापनारायण, हिन्दी उपन्यास कला, हिन्दी समिति, सूचना विभाग, लखनऊ, 1965
7. नागेन्द्र डॉ0, हरदयाल डॉ0, हिन्दी साहित्य का इतिहास नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, संस्करण 2012

नोट :– यह शोध रूपरेखा अंतिम नहीं है, भविष्य में आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया जा सकता हैं।

शोध निर्देशक — शोधार्थी

(डॉ0 किरण कुमारी) — (सुमन कुमारी)